



उडान

क्षेत्रीय रेलवे प्रशिक्षण संस्थान
दक्षिण पूर्व रेलवे, सीनी

वर्ष: 2023 अंक:1



प्राचार्य की कलम से.....

माननीय पाठकगण,

क्षेत्रीय रेलवे प्रशिक्षण संस्थान, सीनी में हमारी प्राथमिकता उत्कृष्ट प्रशिक्षण देना है। प्रशिक्षण किसी कार्य विशेष को करने के लिए कर्मचारी के ज्ञान और कौशल को बढ़ाने की प्रक्रिया है। यह कर्मचारी को वांछित लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रशिक्षित करता है, जिससे कि आगे आनेवाले बाधाओं का पूर्वानुमान एवं यथोचित योजना का सृजन कर सके। हमारा लक्ष्य trainees का सर्वांगीण विकास है, जिससे वह कार्यस्थल पर बेहतर प्रदर्शन करने के साथ सहकर्मियों एवं रेल उपभोक्ताओं के साथ सौहार्द्रपूर्ण सम्बन्ध बनाकर, रेलवे की छवि में उत्तरोत्तर वृद्धि कर सके।

इस संस्थान में हमारा यह प्रयास रहता है कि trainees को उत्कृष्ट प्रशिक्षण देने के साथ - साथ विभिन्न क्षेत्रों में उनकी छुपी हुई प्रतिभा को उभारने का अवसर प्राप्त हो सके, जिससे वे आगे चलकर अपने कार्य क्षेत्र में बेहतर नेतृत्व कर सकें। सहयोगी कर्मचारियों एवं प्रशिक्षणार्थियों की साहित्यिक प्रतिभा की अभिव्यक्ति के रूप में “उड़ान” का यह त्रैमासिक अंक प्रस्तुत है।

पत्रिका में आपकी रचनाओं का भी स्वागत है। पत्रिका में सुधार के लिए आपके अमूल्य सुझाव भी आमंत्रित हैं। इसे तैयार करने में हिंदी समिति एवं हिंदी सचिव संतोष कुमार दुबे का योगदान सराहनीय है। अंत में, मैं आप सभी को हार्दिक सुभकामनाएँ देता हूँ और आपके सहयोग की कामना करता हूँ।

अवतार सिंह

प्राचार्य, क्षे. रे. प्र. संस्थान

द. पू. रेलवे / सीनी

अनुक्रमणिका

क्रम-संख्या	रचना	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1	“हिंदी” मातृभाषा	अखिलेश कुमार	1
2	ZRTI और मैं	अभिषेक कुमार सिंह	2
3	गुरु की महिमा	खेमराज नम्मुराम साहू	3
4	मित्रता की पराकाष्ठा	कौशिक पात्रा	4
5	नया जीवन	बी. विजेता राव	5
6	मय्या	विकास राठौर	6
7	रखना	विकास राठौर	6
8	पिता	अखिलेश कुमार	7
9	तेरा ज़मीर	प्रियतम कुमार	8
10	ऐ- जिन्दगी	उज्जवल कुमार	9
11	अफ़सोस	एहतेशाम अहमद	10

"हिन्दी" मातृभाषा

मैं ना हिन्दू, ना ही मुस्लिम, ना ही सिक्ख ईसाई हूँ,
जो भी हिन्दी से प्यार करेगा मैं उस धर्म का भाई हूँ ,
हिन्दी में कहना सिखाया अपनों से तुम प्यार करो,
कबीर बनी, रहीम बनी, मैं तो मीरा की चौपाई हूँ,
मैं ना हिन्दू, ना ही मुस्लिम, ना ही सिक्ख ईसाई हूँ।

देश-विदेश मे घूम के आयी. फिर मस्ती से ली अगड़ाई,
अंग्रेजी ने ली टक्कर मुझसे, टक्कर खाते चूर हुई,
अपनो ने छोड़ा मुझको इसलिए मन्दारिन मगरूर हुई,
दुःख को तेरे व्यक्त करूंगी क्योंकि मैं तेरी माई हूँ,
मैं ना हिन्दू, ना ही मुस्लिम, ना ही सिक्ख ईसाई हूँ।

भूल गया तू आज मुझे जब बचपन मे तूने बोला था,
पहला शब्द “माँ” का मेरा ही निकला जब तू मुँह खोला था,
नई नवेली अंग्रेजी के चक्कर तू मुझको ठुकराता है,
समझ ले मुझको भारतवासी मैं तेरी पर छाई हूँ,
मैं ना हिन्दू, ना ही मुस्लिम, ना ही सिक्ख ईसाई हूँ।

प्रो. एस.एम.अखिलेश कुमार

फतेहपुर ,उत्तरप्रदेश

ZRTI और मैं

ZRTI में हमारे कदमों ने दस्तखत क्या किये,
आपने सासों की वसीयत हमारे नाम कर दी ।
गुजरते रहे हमारे दिन गलफतों में,
अपने अपनी तमाम मेहनत हमारे नाम कर दी ।
हमें तो फक्र था अपनी नादानी पर कि हम तो नहीं सीखे,
लेकिन आपने सारी अनुभव अपनी काबिलियत हमारे नाम कर दी ।

हमने तो यहाँ तक सोच रक्खा था,
कि पढ़ाओ कितना पढ़ाओगे सिगनल, हम तो नहीं समझने वाले ,
लेकिन आपने प्रयास भागीरथ हमारे नाम कर दी ।
चाहे आंधी के साथ बारिश हो या ज्येष्ठ की दोपहरी,
खुद रहकर पसीनो में, सारी सहूलियत हमारे नाम कर दी ।

जितने लोग उतनी बातें, कोई फर्क न ला सका ।
आपने अपने सोच से, वो जम्हूरियत हमारे नाम कर दी ।
जिसे डिगा न सके कोई आंधी, कोई भूकंप, कोई आपदा,
आपने हार न मानने की जुनूनियत हमारे नाम कर दी ।

जिसे पा न सके लोग लाखों-करोड़ों में,
आपने अपना स्नेह, वो बेपनाह मोहब्बत हमारे नाम कर दी ।
ZRTI में हमारे कदमों ने दस्तखत क्या किये,
आपने सासों की वसीयत हमारे नाम कर दी ।

- अभिषेक कुमार सिंह ,बैच नंबर- 05/18
(05 /18 बैच के सभी PRO GUARD की तरफ से)

गुरु की महिमा

अस्तित्व कहाँ था दुनिया में हमारा,
गुरु ने ही पहचान बनाया ।
क्या थे पहले कच्ची माटी के पुतले,
गुरु ने ही हमें सच्चा इन्सान बनाया ॥

गुरु की वाणी सुन -सुनकर तो हमने ,
अक्षर ज्ञान को है जाना ।
गुरु ने बताया तभी तो हमने ,
हृदय में बसे भगवान को जाना ॥

गुरु ने कहा कि प्यारे ,
तुम सबसे प्रीत करो ।
गुरु ने बताया जग में रहकर ,
तुम सबका हित करो ॥

गुरु की बातें सुनकर ,
हमने सुबह शाम को जाना ।
गुरु ने बताया तभी तो हमने ,
कृष्ण और राम को जाना ॥

गुरु की महिमा किसने जानी ,
यह तो अपरम्पार है ।
ज्ञान दिया हमें गुरु ने ,
यह गुरु का हम पर उपकार है ॥

ऐसे परम पूज्य संसार के समस्त गुरुओं को शत-शत नमन ।

- खेमराज नम्मुराम साहू
परिवीक्षाधीन स्टेशन मास्टर

बैच - 07/22

मित्रता की पराकाष्ठा

फटे वस्त्र देख सुदामा,
हरि स्वयं को न रोक पाए ।
पांव के छाले, हाथ के घाव,
देख हरि विचलित हुए ।
प्रेमलिप्त था वह आलिंगन,
पुलकित हो उठा सृष्टि का कण-कण।
सखा को दिया सिंहासन,
स्वयं विराजे भू -पर ।
सुदामा पर कुपित हुए,
इतने वर्षों से न किया याद,
क्या यही है दोस्ती की सौगात ।
अश्रुधारा से चरण कमल धाए,
रेशमी वस्त्र से सजाए,
पेट भर भोजन करवाया ।
कहा मित्र मेरे लिए क्या लाए,
सुदामा संकुचित होकर बोले,
चावल के दो दाने भर है ।
प्रभु ने उसे हर्षित होकर खाया,
जैसे सृष्टि की तृप्ति आज ही पाया ।
सुदामा पर हुए तुष्ट,
दान किये आधा राष्ट्र ।
स्वर्ग से हुई पुष्पवर्षा,
मित्रता की यह पराकाष्ठा ।

कौशिक पात्रा,
परिवहन अनुदेशक,
ZRTI/सीनी

नया जीवन

जिन्दगी भर साथ निभाऊंगा, ऐसा कसमें खाकर,
जो लाए थे मुझे, मेरे घर से इतना दूर ब्याह कर ।
छोड़ गए अचानक से अकेला मुझे,
जो कहते थे ना छोड़ूंगा कभी तन्हा तुझे ॥
क्या करूँ, क्या ना करूँ, कुछ समझ नहीं आता है,
चली जाऊँ उनके पास यही मन में आता है ।
पर ! मर भी तो नहीं सकती, माँ हूँ ना मैं,
इसीलिए लाल को सीने से हटाया भी नहीं जाता हैं ॥
बोला था उस दिन मुझे, लिपटकर इतनी बड़ी बात,
कि, “माँ तुझे कभी ना रोने दूंगा ।
पापा की कमी तो पूरा नहीं कर सकता,
पर उनकी कमी ना कभी होने दूंगा”॥
मेरी हिम्मत बनकर, मुझमें उसने शक्ति का ऐसा संचार किया है,
मैंने भी उसके लिए कभी भी ना रोने का विचार किया है ।
आ गई हूँ सब परीक्षाओं को पार कर, लेने प्रशिक्षण,
उसके सारे सपनों के लिए ।
मेरा जीवन देन है मेरे मुन्ना की, कह रही हूँ ,
मेरे सारे अपनों के लिए ॥
हूँ थोड़ा दिन दूर यहाँ, पर रोज मुझे बोलता हैं,
माँ अपना ध्यान रखना,
आपके सिवा कोई नहीं है मेरा, आप हो तो मैं हूँ
इसीलिए अपने आपको संभाल रखना ॥
अब तो मैंने उससे जीना सीख लिया है,
हंस कर उसका साथ निभाऊंगी ।
करूंगी उसकी हर खुशी को पूरा,
ऐसी ‘माँ’ बन दिखाऊंगी ॥

- बी. विजेता राव

परिवीक्षाधीन स्टेशन मास्टर

मंडल- बिलासपुर, रोल नंबर- 66

मय्या

चूम लेता हूँ उस मिट्टी को, जहाँ तेरे निशान मिले हैं ।
तू ही तू मुझमें है मय्या, मुझमें तेरे प्राण मिले हैं ॥
तू क्या है, तू करुणा है, तू ममता निराली है ।
पीठ चाकू में घोंप रहे हैं, ऐसे भी हैवान मिले हैं ॥
वेद, पुराण, कुरान और गीता, तू यशोदा तू है सीता ।
सब में तेरे बखान मिले हैं, तू ही तू ॥
तेरी नजरों में शान-ए-कुदरत, कदमों में जन्नत मिली है।
हाथ रखा है जब भी सर पर, सारे ये ही वरदान मिले हैं।।
सबको पता है सबको खबर है, तू ही धरती पर ईश्वर है।
तुझमें अल्लाह, राम मिले हैं, तू ही तू ॥

रखना

एक बात का तू हमेशा ध्यान रखना,
चाहे छोटी हो मगर जारी अपनी उड़ान रखना ।
पहुँचा जहाँ न कोई हो, मगर चाह सबकी हो,
अपने कब्जे में ऐसे तू मक़ाम रखना ।
माता -पिता और गुरु के चरणों में,
सदा तू अपने प्रणाम रखना ।
ना कोई लाया है ना कोई लेकर जायेगा,
एक हिस्सा तू अपना कहीं पर दान रखना ।
धुआं हो जायेगा ये शरीर एक दिन ,
लोगों के दिल में जिंदा अपनी शान रखना ।
एक बात का तू हमेशा ध्यान रखना.....

- विकास राठौर, बैच # PRO

ALP 10/22

“पिता”

क्या लिखूँ पिता के लिए,
कि वो हमें धूप सह कर छांव देता है,
हमें खुशी देने के लिए कागज की नाव देता है,
कभी वो पीठ में हमें मैटाकर खुद घोड़ा बन जाता है,
हमारी मुस्कराहट के लिए अपने गम भूल जाता है।

क्या लिखूँ पिता के लिए,
कि तो मक्का, मदीना, चर्च, गुरुद्वारा का उपदेश है,
जब हम भूखे रहे, जाता कमाने के लिए परदेश है,
उसने सहा है वो जख्म जिसे कहते भूख है,
हमारा पेट भरा है तो हम कहते हैं बड़ा सुख हैं।
क्या लिखूँ पिता के लिए,

कि वो खुदा का दूसरा रूप है,
या उसका चेहरा बड़ा ही सुरूप है,
उंगली पकड़ कर हमें चलना सिखाया,
पौधे थे हम सींच कर उसने पेड़ बनाया।
क्या लिखूँ पिता के लिए,

बाजार गया हो हमें कुछ खाने को लाता है,
जेब में न हो एक पैसे फिर भी हमारे लिए धनवान बन जाता है,
उसने तो हमें सेया,पाला और बड़ा कर दिया,
हमें पसीने कि बूँदों से सींच कर खड़ाकर दिया,

जब हमारी बारी आई तो हम पीछे हट जाते हैं,
बहुत मेहनत पड़ती है, ये बहाने उसे सुनाते हैं,
नहीं होगा हमसे ये कह कर फटकार उसे लगाते हैं,

ऐ मंजिलो के मुसाफिर सुन लो,
ये वक्त नहीं है, बहाने बनाने का,
अब वक्त है, उसके सपनों को पूरा कर दिखाने का,
उसके बुढ़ापे की बैशाखी बन जाने का,
अपने कंधों पर उसका बोझ उठाने का,
जिस दिन पिता का तुम सहारा बन जाओगे,
उसी दिन चारों धाम को अपने घर में पाओगे।

तेरा जमीर

तू उठ... तेरा जमीर तुझे पुकार रहा है ।

तू क्यों किसी के पीछे है भागे।

तू चल.... और निकल जा इन सब से आगे ॥

तेरी अपनी है मंजिल, तेरे अपने हैं रास्ते,

क्यूँ तू रुका है, और किसके वास्ते,

न जाने ये खयाल रह रह के क्यूँ सता रहा है।

तू उठ... तेरा जमीर तुझे पुकार रहा है।

इन बेजमीरो की दुनिया में, कोई नहीं है, तेरा अपना।

जिसकी खातिर तू मुक्कमल करे अपना सपना।

ये चंद बेगैरत लोग इसे धिक्कार रहा है।

तू उठ....तेरा जमीर तुझे पुकार रहा है॥

हर चेहरे के पीछे है, न जाने कितने चेहरे।

इन चेहरों ने तुम्हें, अनगिनत घाव दिये हैं गहरे ॥

अब तो आलम ये है कि, बदन का हर जख्म कराह रहा है।

तू उठ - तेरा जमीर तुझे पुकार रहा है॥

इस फरेबी जहां में, क्या तु भी फरेब किये जा रहा है।

तू उठ....तेरा जमीर तुझे पुकार रहा है।

ये तेरी लड़ाई है, और तुझे ही लड़ना है।

तू ये मत सोच, कि आगे क्या होता है।

बेवजह किसी और से उम्मीद, तु क्यूँ किये जा रहा है।

तू उठ.... तेरा जमीर तुझे पुकार रहा है॥

-प्रियतम कुमार

Sr. TM (Goods)

बैच नं-Ref. TM- 01/23

ऐ जिंदगी

ऐ जिंदगी !

जरा बीते दिनों का हिसाब दे,
क्या खोया, क्या पाया मैंने,
जरा इसका मुझे जवाब दे ।
पापा की डांट में छुपा नेह,
और मां की आंचल का साया,
वो सब कुछ मिलता रहा हमें,
जो कुछ भी था हमने फरमाया ।
दोस्तों की वो प्यारी सी टोली,
वो रास – रंग, वो हंसी ठिठोली,
ये बातें अब हो चुकी पुरानी,
लेकिन जुबां पे जिंदा है,
आज भी वो हर अमिट कहानी ।
स्कूल कॉलेज के वो दिन,
चंद कागज के टुकड़े कमाता हूं,
पर वो जिंदगी नहीं बिताता हूं।
जीवन की गाड़ी चल रही है,
इक लोहे की मशीन सी,
बचपन को याद करके,
दिल में उठती है एक टीस सी
ऐ जिंदगी !
जरा बीते दिनों का हिसाब दे,
क्या खोया, क्या पाया मैंने,
जरा इसका मुझे जबाब दे ।

-

उज्ज्वल कुमार,
परिवहन अनुदेशक

अफसोस

जाने अनजाने इंसान से कभी-कभी ऐसी गलती हो जाती है कि जिसका अफसोस उसे सालों तक रहता है ।

क्योंकि मुझे खेल-कूद बहुत पसंद है इसीलिए अपने प्रशिक्षण संस्थान की खेल-कूद गतिविधियों में रुचि लेता रहता हूँ । बात तकरीबन 3 साल पहले की है । हमारे प्रशिक्षण संस्थान से लगा एक मैदान है, जिसमें प्रशिक्षण संस्थान में आने वाले प्रशिक्षु क्रिकेट खेलते हैं । बरसात के बाद उस मैदान में काफी झाड़ियां और कांटेदार घास उग आए थे । बरसात खत्म होने पर मैंने सोचा कि इसे साफ करा के पिच बनवा दी जाये, ताकि फिर से खेल शुरू हो सके ।

मैंने सफाई कांट्रेक्टर को बुलाकर अगले दिन सुबह-सुबह 5-6 सफाई कर्मचारी (कांट्रेक्टर के मज़दूर) को मैदान में भेजने को कहा ताकि अपने सामने सफाई करा सकूँ । अगले दिन 6 सफाई कर्मचारी सुबह-सुबह मैदान पर आ गए और काम शुरू किया । तब ध्यान आया कि पिच बनाने के लिए कुदाल की ज़रूरत पड़ेगी, जो वे लोग लेकर नहीं आये थे। उन्होंने आपस में एक मज़दूर को कुदाल लाने को कहा और बाकि लोग काम में लग गए ।

वो मज़दूर (जिसका नाम मुझे नहीं पता था) मेरे पास आया और बोला- "सर, 10 मिनट में कुदाल लेकर आता हूँ" । मैंने "हाँ" में अपना सर हिलाया ।

जब आधे घंटे बाद भी वह वापस नहीं आया, तो मैंने बाकियों से पूछा - "कहाँ से कुदाल लाने गया है वो"?

एक ने जवाब दिया- "घर से सर । यहीं, बगल में ही उसका घर है सर" ।

धीरे धीरे इंतज़ार घंटा पूरा कर चुका था । अब मुझे गुस्सा आने लगा । "क्या मज़ाक है, कोई काम नहीं करना चाहता, सिर्फ फ्री में जितना मिल जाए"- मैं मन ही मन बुदबुदाया ।

थोड़े और इंतज़ार के बाद मेरा गुस्सा बर्दाश्त से बाहर था । मैंने काम कर रहे मज़दूरों से पूछा- "उसका मोबाइल नंबर है किसी के पास"?

पास से किसी की आवाज़ आई- "उसके पास मोबाइल नहीं है सर" ।

उसे गए हुए लगभग डेढ़ घंटा होने को आया था । अब मैं मन ही मन ठान चुका था कि आज उसे काम पर नहीं लेना है । आज उसकी हाज़िरी कटवाऊंगा ।

थोड़ी देर बाद वो मज़दूर हाथों में कुदाल लिए हुए आया । उसे देखते ही मैं चिल्लाया- "मज़ाक समझ के रखा है । जब मन किया आए, जब मन किया गए...10 मिनट बोल के डेढ़ घंटे गायब" ।

वो धीरे से बोला- " सर, पहले कुदाल नहीं मिल रहा था, काफी देर बाद मिला, फिर घर पर कुछ लोग भी आ गए, इसीलिए देर हो गया ।

मैं ज़ोर से चिल्लाया- "बेवकूफ बनाने को मैं ही मिला हूँ ।जाओ आज घर पर ही रहो ।"

वो खड़ा मिन्नतें कर रहा था । पर मैं सोच चुका था कि आज इसे काम पर नहीं लेना है वरना इन लोगों की आदत नहीं सुधरेगी ।

मैं धीरे धीरे दूसरी तरफ बढ़ गया । वहां एक दूसरे मज़दूर ने धीरे से कहा- "सरररर ! छोड़ दीजिए न, काम पर ले लीजिए ।"

"अपना काम करो । ज्यादा दूसरे की वकालत मत करो " - मैंने तल्ख लहज़े में जवाब दिया ।

वो दूसरा मज़दूर फिर बोला- " सर माफ़ कर दीजिए न । कल उसका भाई मर गया है । इसीलिए लोग घर पर आ-जा रहे हैं" ।

मेरे मुंह से अनायास ही निकला - "कैसा भाई"? जैसे मैं मौत में भी भाई की परिभाषा खोज रहा था ।

"अपना भाई सर"- जवाब मिला ।

मैंने पूछा - "अपना भाई"?

अपने काम को रोकता हुआ वो बोला- "सरररर ! खास अपना भाई । कल सुबह मर गया ।

जवान ही था । दोपहर बाद उसका अंतिम संस्कार हुआ" ।

ऐसा लगा जैसे कोई नुकीली चीज़ सीने के आर-पार हो गई । एक मिनट के लिए दिमाग सुन्न हो गया । मैं सफ़ाई का मुआयना करने मैदान के दूसरी तरफ चला गया...अपनी आँखों में आए आँसुओं को छुपाने का कोई और तरीका तब नहीं सूझा मुझे ।

ज़रा सोचिए , बचपन से लेकर जवानी तक दो भाइयों के बीच कितने अच्छे-बुरे लम्हों की यादें रही होंगी । लड़ना-झगड़ना, साथ खेलना-कूदना, घूमना-फिरना, खुशी-ग़म...और न जाने कितना कुछ !

उसी भाई की मौत के ठीक अगले दिन सुबह-सुबह वो काम पर मौजूद था । शायद यह उसके अपने बच्चों की भूख ही रही होगी जो उन सब यादों, उन सब लम्हों पर भारी पड़ गई होगी । जब खुद को थोड़ा संभाला तो उसे बुलाकर उसके भाई के बारे में पूछा । पर शायद मेरा ईगो ही रहा होगा, जो एक मामूली मज़दूर से माफ़ी मांगने की बात भी तब मेरे दिमाग में नहीं आई । मैं उससे धीरे से बोलता हुआ मैदान से निकल आया- "तुम पीछे वाले कोने से सफ़ाई कर लो ।"

- एहतेशाम अहमद,

वाणिज्य अनुदेशक